हार-जीत

आपको संदेह हो सकता है कि क्या अंतर-मार्गदर्शन द्वारा जीने वाला व्यक्ति हमेशा सफल होगा। वह हमेशा सफल नहीं होता है, लेकिन वह हमेशा खुश रहता है, चाहे वह सफल हो या असफल। इसके अलावा, जो अंतर-मार्गदर्शन द्वारा नहीं जीने वाला व्यक्ति हमेशा सफल होने पर भी खुश नहीं रह सकता है।

यह जीत निर्णायक कारक नहीं है, क्योंकि जीत कई विषयों पर निर्भर होता है। यहां आनंद रहना निर्णायक कारक है, क्योंकि आनंद केवल आप पर निर्भर होता है। आप असफल हो सकते हैं क्योंकि अन्य आपके साथ मुक़ाबला कर रहे है। आप अंतर-मार्गदर्शन के साथ काम करते है, लेकिन आपके आसपास लोग समझदारी से, धोखे से, योजनापूर्ण से, कपटी स्वभाव से, गैरकानूनी से काम करते है।

इसके अलावा पैदा होने के वक्त आप किस्मत को लिखकर जन्म लेते है। आपको साधना करके यह सीखना होगा कि किस्मत को कैसे मिटाना है। क्योंकि किस्मत का प्रभाव इतना अधिक होता है की आप अपने अपेक्षित चीजों को हासिल नहीं कर पाते है। एक कहावत है कि, हम एक चाहते है तो परमात्मा कुछ और चाहता है। यदि आपके अपेक्षित चीज को आपके परमात्मा भी स्वीकार करने से ही आपके अपेक्षित चीज संभव होगा। तो महसूस करें कि आपके भीतर भी कई बाधाएँ है।

इस तरह सफलता अनेक विषय पर निर्भर होता है। इसलिए आपके सामर्थ्य और निपुणता को, सफलता के आधार पर मत पहचानिए, आनंद के आधार पर पहचानिए। अपने आप को बताइए कि "क्या आपने मेरे प्रतिभा को देखा, मैं मुसीबत में होने पर भी खुश हूं।"

उदाहरण के लिए, आप अपने अपेक्षित प्राप्त करने पर सोचते हैं कि आपने जीत हासिल किए है। सोचिए कि आप व्यापार कर रहे है। तब आप सोचते हैं कि हर रोज मुझे कम से कम 5000 रुपयों कमाना है। आप अपने अपेक्षा से कम कमाने से आप दुखित हो जाते है। इसके अलावा, यदि आप उससे ज्यादा कमाएंगे तो आप थोड़े वक्त खुश रहेंगे, उसके बाद आप परेशानी में पड़ जाएंगे।

क्योंकि आप इस दुविधा में होंगे कि, क्या मैं कल भी इसी तरह से कमाऊंगा या नही। इस तरह जीवन के संबंधित सभी क्षेत्रों में आप कई सोचते हैं, वे सब पूरी होने की आकांक्षा करते है। लेकिन सारे अपेक्षित चीज किसी को अब तक पूरा नहीं हुआ। इसीलिए हमें इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि, हर एक के जीवन में सफलता-असफलता, कष्ट-सुख होते है। ज्यादातर लोग कष्ट आने से उदास हो जाते है, सुख आने से उत्साहित हो जाते है। इसके बजाय आपको हमेशा खुश रहना है, तो इसका समाधान कष्ट-सुख में, सफलता-असफलता में, लाभ-नष्ट में, चाहे जो कुछ भी हो हमेशा आनंद से रहना है।

इसलिए सांसारिक दृष्टिकोण से कहना है तो अंतर-मार्गदर्शन के साथ जीने से आप हमेशा सफल नहीं होंगे। लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से कहना है तो आप हमेशा सफल

होंगे। आध्यात्मिकता में आनंद रहना ही सफलता का निर्णायक तत्व है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आपको बाहरी समस्याएं हैं या नहीं, आपने सफलता पाए हैं या असफलता पाए हैं, लेकिन यह आप हमेशा आनंदित रहना ही महत्वपूर्ण है।

इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि दुनिया आपको असफलता का प्रतिनिधि बनाती है या दुनिया आपको हीरो बनाकर सफलता का प्रतिनिधि बनाती है। आप हमेशा आनंद रहेंगे चाहे कुछ भी हो जाए। इसलिए मेरे दृष्टि के अनुसार आनंद रहना ही सफलता है। यदि आप समझते हैं कि आनंद रहना ही सफलता है, तो मैं कहूंगा कि अंतर-मार्गदर्शन में आप हमेशा सफल होंगे।

यदि आप इस दृष्टिकोण में रहते हैं की, "मैं स्वास्थ्य रहने से ही खुश रहूंगा, मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकता, सफलता पाने से ही मुझे महत्व होगा, मैं नौकरी पाने के बाद ही खुश रहूंगा", तो चाहे आप जितना भी हासिल करें, निश्चित रूप से आप कमजोर हो जाएंगे। निश्चित रूप से बाहरी चीजें आप पर हावी होंगे। इसका मतलब यहां आपको मानसिक विकलांगता है, क्योंकि आपकी आनंद आप पर नहीं, बल्कि सौ प्रतिशत केवल बाहरी प्रतिभा, बाहरी लोगों पर निर्भर है।

फिर भी ज्यादातर लोगों को आनंद सफलता नहीं है, सफलता का मतलब कुछ और है। वह दुख भी हो सकता है। भले ही आप जानते हैं कि इससे आपको दुख होगा, फिर भी आप सफलता पाने के लिए उत्सुक होते है। सांसारिक दुनिया में सफल लोग भी दुखों से भरे हुए हैं, क्योंकि उस सफलता से उन्हें कई नए समस्याएं उत्पन्न हो रहे है। ऐसे लोग मेरे पास आकर, मेरे सलाह ले रहे है। और सांसारिक दुनिया में असफलता पाने वाले लोगों के बारे में बोलने की जरूरत भी नहीं है।

यह जानते हुए कि अमीर लोग भी दुखी है, फिर भी कई लोग अपने वर्तमान स्थिति से तृप्त ना होते हुए समृद्धि को और बढ़ाना चाहते है। चाहे वह कितना भी दुखद हो, फिर भी उन्हें सफलता प्राप्त करना ही ज्यादा महत्वपूर्ण है। तो सांसारिक लोगो को सफलता का मतलब क्या है? उनके लिए सफलता का तात्पर्य सिर्फ अपने अहं को तृप्त करना है, आनंद प्राप्त करना नहीं। सिर्फ सफलता हासिल करने के बाद लोगों से मिलने वाला प्रशंसा पाने के लिए ही वे उत्सुक होते है।

आप सफलता पाने के लिए सब कुछ खो चुके होंगे - आपके आत्मा, आपको आनंद देने वाला मासूमियत, शांतिपूर्ण स्थिति, निशब्द स्थिति, इस तरह आप परमात्मा के पास पहुंचाने वाले सभी को खो चुके होंगे, लेकिन समाज कहता है कि आप सफल हुए है। संसार के लिए अहं तृप्ति करना ही सफलता है। लेकिन मेरे दृष्टि में आनंद रहना ही सफलता है। मेरे बारे में किसी को पता है या नहीं यह महत्वपूर्ण नहीं है। किसी तरह रहने से भी मैं खुश रहे तो वही मेरे दृष्टि में सबसे बड़ा सफलता है।

इसलिए इस अंतर को याद रखिए, क्योंकि सिर्फ संसार में सफलता पाने के लिए, कई लोग अंतर-मार्गदर्शन को खोजकर उसी में रहना चाहते है। लेकिन अंतर-मार्गदर्शन उनके लिए

सिर्फ निराश, निरुत्साह और आशाभंग के कारण बनता है। वास्तव में, वे पहले अंतर-मार्गदर्शक को खोज नहीं सकते, यदि उन्होंने खोज लिए, तो भी वे दुख में ही होंगे। क्योंकि उनका लक्ष्य, बाहरी दुनिया से अपना पहचान प्राप्त करना और अहं को संतुष्ट करना है, आनंद पाना नहीं।

मैं यहां नहीं कह रहा हूं कि अंतर-मार्गदर्शन द्वारा आप सांसारिक सफलता हासिल नहीं कर सकते। और मैं यह भी नहीं कह रहा हूं कि सफलता को कोई मूल्य नहीं है, इसे तिरस्कार करें। सफलता को भी अपना स्थान है। लेकिन सिर्फ सफलता ही पर्याप्त नहीं है। यहां मैं कह रहा हूं कि आप सिर्फ आनंद से जुड़े सफलताओं को प्राप्त करेंगे। अपनी आत्मा का समर्थन मिलने से ही आप सफलता प्राप्त कर सकते है। अर्थात सफलता आधारित चेतना से आनंद आधारित चेतना की ओर ले जाना ही मेरा उद्देश्य है। सफलता-असफलता, प्रकाश-अंधेरे की तरह है। वे आते-जाते रहते है। असफलता को समझते हुए उसके अनुसार आपमें परिवर्तन करके आनंद आधारित चेतना में प्रवेश करने के तुरंत ही, आप अपने योग्यता के अनुसार परिणाम प्राप्त करेंगे।

इसलिए यदि आप आत्मा के साथ रहेंगे तो आप आंतरिक दुनिया में हमेशा सफलता हासिल करेंगे। यदि आप अशाश्वत चीजों के साथ या सांसारिक चीजों के साथ ही रहना चाहते हैं, तो बुद्धिमान लोगों को, प्रतिस्पर्धात्मक लोगों को, ईर्ष्यालु लोगों को, गलत तरीके से व्यापार करने वाले लोगों का अनुसरण कीजिए। तब आप पूरी दुनिया जीत सकते हैं, लेकिन अपने आप को, आप में रहने वाले शाश्वत परमात्मा को खो देंगे। यदि आप केवल इस दुनिया में कुछ पाना चाहते हैं, तो अंतर-मार्गदर्शन की बात मत सुनिए।

इसलिए मन में स्पष्टता को प्राप्त कीजिए, सफलता आधारित चेतना में मत रहें। इस दुनिया में सफलता एक बड़ी विफलता है। इसलिए सफलता या जीत हासिल करने की कोशिश मत कीजिए, वरना आप असफल हो जाएंगे। बाहरी प्रतिभा पर निर्भर ना होने वाला आनंद में हमेशा रहने के लिए क्या करना है, इसके बारे में ही सोचिए। तभी आपके जीवन में चमत्कार होंगे।

** यह ज्ञान तेलुगु भाषा से अनुवादित है। तेलुगु या अन्य भाषाओं में यह ज्ञान पढ़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें **http://darmam.com/library.html**

दान

न्यूएनर्जी-अद्वैत ज्ञान से प्रेरित कोई व्यक्ति या कोई भी, दान करना चाहता है, तो कृपया निम्नलिखित बैंक खाते में पैसा जमा करें। आपकी मदद हमें इस ज्ञान को बहुत सारे लोगों तक फैलाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। Name: P.Sreedhar; SBI Bank A/c No: 30603897922. Branch: Hanamkonda; City: Hanamkonda, Warangal District, India. IFSC Code: SBIN0003422 Mobile No: 9390151912. आपकी उदारता और समर्थन की सराहना की जाती है! This mobile No. also has GooglePay and PhonePe.